भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
मत्स्यपालन विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 4913
01 अप्रैल, 2025 को उत्तर के लिए

मछली पकड़ने के जाल से संबंधित उद्योग

4913. श्री विजयकुमार उर्फ विजय वसंत:
श्री बी. मणिक्कम टैगोर :

क्या मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) भारत में मछली पकड़ने के जाल से संबंधित उद्योग और वर्तमान बाजार आकार का ब्यौरा क्या है तथा 2030 तक वृद्धि के क्या अनुमान हैं, सिंथेटिक और मछली पकड़ने के टिकाऊ जालों की मांग में कितनी अपेक्षित वृद्धि होगी;

(ख) विगत पांच वर्षों में मछली पकड़ने के जालों में पर्यावरण अनकल सामग्रियों के उपयोग की प्रतिशत वृद्धि का ब्यौरा क्या है तथा मछली पकड़ने के उद्योग में इन सामग्रियों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए क्या विशिष्ट उपाय किए गए हैं; और

(ग) हाल के वर्षों में उद्योग के विकास में योगदान देने वाली सिंथेटिक सामग्रियों का ब्यौरा क्या है तथा भारतीय विनिर्माताओं को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए अनुसंधान एवं विकास में निवेश हेतु क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री
(श्री जॉर्ज कुरियन)

(क) से (ग) : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के अंतर्गत केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान [(सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीज़ टेक्नोलोजी (सीआईएफटी)], कोच्चि ने सूचित किया है कि वर्तमान में देश में कुल मछली पकड़ने के जाल का उत्पादन लगभग 20,000 से 25,000 टन है, जिसकी वृद्धि दर प्रति वर्ष लगभग 5% है। आईसीएआर-सीआईएफटी ने यह भी सूचित किया है कि नायलॉन के सिंथेटिक फाइबर का योगदान 45-50% है, जिसमें नायलॉन मोनोफिलामेंट का प्रमुख योगदान है और फिशिंग नेट उद्योग के विकास में योगदान देने वाले सिंथेटिक सामग्री में हाई डेनसिटी पॉलीइथिलीन (एचडीपीई) का योगदान 35-40% है, और अन्य सिंथेटिक फाइबर का योगदान 5% है। भारतीय निर्माताओं को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए विभिन्न फिशिंग गियर सामग्री के लिए भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के अंतर्गत मानक उपलब्ध हैं। आईसीएआर-सीआईएफटी, कोच्चि ने यह भी सूचित किया है कि फिशिंग नेट के लिए पर्यावरण के अनुकूल फिशिंग सामग्री पर अनुसंधान और विकास चल रहा है।

*****